卐 ॐ गं गणपतये नमः 卐

!! श्रीराम !!

श्री राम जय राम जय जय राम

जोग लगन ग्रह बार तिथि सकल भए अनुकूल।
चर अरु अचर हर्षजुत राम जनम सुख मूल॥

सम्पादक मण्डल

पं0 दिनेश चन्द्र शर्मा
डॉ0 भगवान दास पटैरया
श्री जगदीश प्रसाद शर्मा 'सरल'
श्रीमती मंजु बंसल

स्मारिका

विक्रमी संवत् 2075 सन् 2018-2019

वार्षिक अंक - 25

श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति (पंजीकृत)

पंजीकृत कार्यालय : 593, ग्राम बिजवासन, नई दिल्ली - 110061
स्थानीय कार्यालय : ए-447, सैक्टर - 47, नोएडा - 201 303
वैबसाइट - www.shriramcharit.com, ई-मेल - contactus@shriramcharit.com
दूरभाष - 0120-4305457
चल - 9811056467

मुद्रक : एक्सप्रैस प्रिंट हाउस, गाजियाबाद
फोन : 9350772514
ई-मेल : vinit.tyagi.gzb@gmail.com

पाठकों से निवेदन

स्मारिका का यह पच्चीसवाँ वार्षिक अंक आपके हाथ में है। हमारा प्रयास रहा है कि इसमें भगवान श्रीरामजी के आदर्शों को प्रतिपादित करते हुए ऐसे लेख प्रकाशित किए जाएँ, जिनसे समाज में नैतिक मूल्यों का उत्थान हो। इस दिशा में हम कहाँ तक सफल हुए, यह आप ही बता सकते हैं। आशा करते हैं कि आप पत्रिका पढ़कर हमें **अपना लेख / अपनी प्रतिक्रिया अवश्य भेजेंगे,** ताकि हम अगले अंक में उसे समाहित कर सकें। लेख के संदर्भ में निम्नांकित बिन्दु उल्लेखनीय हैं –

1. **लेख श्रीरामचरितमानस में वर्णित प्रसंगों पर तथा उसका शीर्षक यथासंभव चौपाई, दोहा आदि पर आधारित हो।**
2. लेख में उद्धरित दोहा–चौपाई आदि गीताप्रेस गोरखपुर से प्रकाशित 'श्रीरामचरितमानस' के अनुसार हों। कृपया संदर्भ निम्नांकित प्रकार से अंकित करें।

   जामवंत के बचन सुहाए। सुनि हनुमंत हृदय अति भाए।।

   (5/1/1)

   5/1/1 का आशय है, पाँचवे काण्ड (सुंदरकाण्ड) के पहले दोहे की पहली चौपाई। सातों काण्डों को क्रमशः इस प्रकार से इंगित करें :– 1. बालकाण्ड, 2. अयोध्याकाण्ड, 3. अरण्यकाण्ड, 4. किष्किंधाकाण्ड, 5. सुंदरकाण्ड, 6. लंकाकाण्ड एवं 7. उत्तरकाण्ड।
3. लेख ई–मेल से भेजने हेतु कृपया पृष्ठ सं0 12 देखें। लेख **bpateria@gmail.com** पर भी भेज सकते हैं?

स्मारिका के प्रकाशन में विज्ञापन से प्राप्त धन का महत्वपूर्ण योगदान है। अनुरोध है कि आप भी अपने संस्थान का विज्ञापन भेजकर पुण्य लाभ प्राप्त करें।

विज्ञापन दरें इस प्रकार से हैं –

क्रमांक	विवरण	राशि (रुपयों में)
1.	प्रथम पृष्ठ के पीछे (दूसरा कवर पेज)	35,000
2.	अंतिम पृष्ठ (चौथा कवर पेज)	30,000
3.	अंतिम पृष्ठ के पीछे (तीसरा कवर पेज)	25,000
4.	पत्रिका के अन्दर पूर्ण पृष्ठ	15,000
5.	पत्रिका के अन्दर आधा पृष्ठ	10,000

पाठकों से प्राप्त सहयोग राशि का योगदान भी इसके प्रकाशन में सराहनीय है। इसे भेजने हेतु विवरण निम्नांकित है। **''श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति''** के नाम 'भारतीय स्टेट बैंक, सैक्टर 31, नोएडा की शाखा में चालू खाता सं0 35299035590, ब्रांच कोड : 15971, IFS Code : SBIN0015971। विज्ञापन–प्रकाशन राशि भी इसी खाते में जमा करा सकते हैं।

कृपया सहयोग राशि अथवा विज्ञापन-प्रकाशन राशि भेज कर हमें उपर्युक्त ई मेल या 09899004263 पर सूचित करने का अनुग्रह करें, ताकि तदनुसार प्राप्ति रसीद जारी की जा सके।

अध्यक्ष की ओर से

प्रिय श्रीरामचरितमानस प्रेमियों!

आजकल हमारे देश में ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण विश्व में सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है। समाज में पाश्चात्य संस्कृति का तेजी से प्रभाव बढ़ रहा है। हम अपनी शिक्षा, व्यवहार, समाज के प्रति कर्तव्य, धर्म तथा सेवा भावना से विमुख होकर मानव जाति का अहित कर रहे हैं। आज प्रेम और भाईचारे का स्थान हिंसा एवं वैमनस्य ने ले लिया है, जिसका प्रमुख कारण अत्यधिक सांसारिक वैभवों को प्राप्त करने की होड़ है। ऐसी विषम परिस्थितियों में भी आपसी सद्भाव बढ़े, जन–जन में ईश्वरीय आस्था तथा भावी पीढ़ी में सुसंस्कार जागृत हों, इसी उद्देश्य से 'श्रीरामचरितमानस सत्संग समिति, नोएडा' की सन् 1990 में स्थापना हुई, जिसका अगस्त 2015 को श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति में विलय हो गया है।

हमारा उद्देश्य श्रीरामचरितमानस पाठ एवं प्रवचनों के माध्यम से मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीरामचन्द्रजी के पावन चरित्रों का प्रचार–प्रसार कर समाज एवं धर्म की सेवा करना है। इसके द्वारा हम सभी का कल्याण होगा। यह समिति अपने स्थापना काल से मार्च 2018 तक 444 मानस पाठ एवं प्रवचनों के कार्यक्रम आयोजित करा चुकी है। इसी कड़ी में अब तक अनेक विख्यात कथाकारों जैसे– संत प्रवर श्री विजय कौशलजी महाराज, रामभक्त पं0 मधुकरजी, श्री लक्ष्मीनारायण शर्माजी, डॉ0 पं0 रामगोपाल तिवारी, पं0 बलराम मिश्रजी, पं0 बैजनाथ शुक्लजी, श्री श्री 1008 श्री प्रेमाचार्यजी, श्री बैजूनाथजी महाराज, आचार्य श्यामसुंदर शरणजी, गोस्वामी रमाकांत चतुर्वेदीजी, मानस माधुरी श्रीमती अखिलेश्वरी देवी, आचार्य अखिलेश्वरानन्द (अंगदजी) महाराज, स्वामी श्री राजेश्वरानन्द सरस्वतीजी, पं0 सुरेन्द्र शास्त्री 'मानस कुसुम' आदि के प्रवचनों का आयोजन किया जा चुका है। ऐसे ही कार्यक्रम भविष्य में भी होते रहें, ऐसी परम पिता परमात्मा से प्रार्थना है।

गत 27 वर्षों की भाँति इस वर्ष भी रविवार दिनाँक 25 मार्च 2018 को श्रीराम जन्ममहोत्सव का आयोजन महाराजा अग्रसेन भवन, सैक्टर–33, नोएडा में किया जा रहा है। इस स्मारिका के प्रकाशन में आर्थिक सहयोग के लिए हम सभी विज्ञापनदाताओं एवं दानदाताओं का आभार प्रकट करते हैं। इस वर्ष "श्रीरामनवमी" के पावन पर्व पर रामकथा एवं श्रीरामजन्ममहोत्सव का **आयोजन उपर्युक्त तिथि पर प्रातः 10 बजे से अपराह्न 2 बजे तक होगा। इस पावन बेला में डॉ0 पं0 रामगोपाल तिवारी श्रीरामकथा अमृत पान कराएँगे।** मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस कार्यक्रम के द्वारा जन–जन में धार्मिक भावना का प्रचार–प्रसार होगा, समाज का नैतिक उत्थान होगा तथा प्रभु श्रीराम के आदर्शों पर चलकर हम स्वयं अपने परिवार, समाज, देश और विश्व का कल्याण कर सकेंगे।

समिति द्वारा आयोजित मानस पाठ एवं प्रवचन

श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति (पंजीकृत) द्वारा समय समय पर श्रीरामचरितमानस अखण्ड पाठ / सुन्दरकाण्ड पाठ एवं प्रवचन (सत्संग) का आयोजन किया जाता रहा है। इस क्रम में **मार्च 2018 तक 444 मानस पाठ एवं प्रवचन आयोजित किये गये।** इसका विवरण समिति की विगत वर्षों की स्मारिका में प्रकाशित किया गया है। पिछले एक वर्ष में 11 पाठ एवं प्रवचन (श्रीराम कथा ज्ञान यज्ञ) आयोजित हुए, जिनका विवरण निम्नांकित है –

क्र.सं.	**तिथि**	**नाम व पता जिनके निवास पर कार्यक्रम आयोजित हुए**
1.	07.04.2017	शिव मंदिर, ग्राम–बरौलिया, जिला–एटा–मैनपुरी
2.	09.04.2017	श्री सुनीत भोगल, सी–4 / 182, सैक्टर–36, नोएडा
3.	23.04.2017	श्री अश्विनी कुमार भारद्वाज, बी–365, सैक्टर–92, नोएडा
4.	24.07.2017	पं0 दिनेश चंद शर्मा, ए–447, सैक्टर–47, नोएडा
5.	09.12.2017	केन्द्रीय विद्यालय संगठन स्टाफ, सैक्टर–32, नोएडा
6.	04.01.2018	श्री लीलूराम वर्मा, डी–144, सैक्टर–108, नोएडा
7.	03.02.2018	श्री मनवीर सिंह, सी–99, सैक्टर–108, नोएडा
8.	07.02.2018	श्री एन.के. गुप्ता, इ–103, इलाइट होम, सैक्टर–77, नोएडा
9.	13.02.2018	डॉ0 भगवान दास पटैरया, डी–11, सैक्टर–36 नोएडा
10.		
11.		

श्रीराम कथा ज्ञान यज्ञ कार्यक्रम

क्र.सं.	**तिथि**	**कार्यक्रम**	**स्थान**	**कथा व्यास**
1.	04.04.2017	श्रीराम जन्म महोत्सव	अग्रसेन भवन, सै0–33, नोएडा	पं॰ सुरेन्द्र शास्त्री 'मानस कुसुम'
2.	30.07.2017	तुलसी जयंती समारोह	श्रीराम मन्दिर, सी ब्लॉक, सैक्टर–36, नोएडा	श्री पंकज रामायणी 'मानस चातक'

इस अंक में

क्रमांक	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	अध्यक्ष की ओर से		3
2.	समिति के सदस्यों की सूची		7
3.	पाठकों के विचार		9
4.	श्रीराम जन्ममहोत्सव की झलकियाँ	कथा व्यास : पं॰ सुरेन्द्र शास्त्री 'मानस कुसुम'	13
5.	तुलसी जयंती समारोह	कथा व्यास : श्री पंकज रामायणी (मानस चातक)	17
6.	मेरी आध्यात्मिक अनुभूति	एस0एस0 शुक्ला	21
7.	सांति सुमति सुचि सुंदर रानी	डॉ0 पं0 रामगोपाल तिवारी 'मानस–रत्न'	27
8.	संकट–मोचन हनुमान बली	सरल शास्त्री	32
9.	नामु राम को कलप तरु	देवेन्द्र जी शर्मा	35
10.	रामु न सकहिं नाम गुन गाई	पं0 बैजूनाथ जी महाराज	39
11.	सगु प्यार का पंथ कठिन	स्व0 पं0 श्री नंद किशोर तिवारी	44
12.	जिन्ह के श्रवन समुद्र समाना	डॉ0 सहृदय नारायण उपाध्याय	47
13.	राम नाम कर अमिति प्रभावा	पं0 दिनेश चंद्र शर्मा	55
14.	यदि भू पर तुलसी न आते	श्री हर प्रसाद चतुर्वेदी	60
15.	बंदउँ अबधपुरी अति पावन	श्री कैलाश त्रिपाठी	61
16.	भारतीय संस्कृति के प्रतिनिधि राम	श्री जगदीश प्रसाद शर्मा	65
17.	छबि समुद्र हरि रूप बिलोकी	डॉ0 भगवान दास पटैरया	71
18.	दान करइ कल्यान	बैद्य अच्युत कुमार त्रिपाठी	75
19.	बिनु हरि भजन न जाहिं कलेसा	डॉ0 राजाराम त्रिपाठी	81

क्रमांक	विषय	लेखक	पृष्ठ
20.	तुलसी तुम्हें प्रणाम	श्री राजेश तिवारी	84
21.	संभु प्रसाद सुमति हियं हुलसी	श्रीमती रीता कश्यप	85
22.	हरष हृदयं निज नाथहि चीन्ही	श्रीमती ज्योत्सना प्रसाद	91
23.	जामवंत के बचन सुहाए	श्री राम जन्म सिंह	95
24.	राम सेतु की संभावित संरचना	श्री गोपाल कृष्ण फरलिया	99
25.	प्रभु की कृपा भयउ सब काजू	श्री अवध किशोर दूबे	104
26.	उर प्रेरक रघुबंस बिभूषन	श्री जगत प्रकाश पालीवाल	106
27.	अजहुँ जासु उर सपनेहुँ काऊ	श्री सुरेश तिवारी	109
28.	सच्चे हितेषी अपमान भी सह लेते	श्रीमती कुसुम पटैरया	111
29.	हनूमान सम नहिं बड़भागी	श्रीमती राजवती शर्मा	117
30.	घाट मनोहर चारि	पं0 राम नरेश तिवारी	123
31.	थके नयन रघुपति छबि देखें	श्री नरेन्द्र कुमार चाचान	126
32.	श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति का वर्ष 2016–17 का आय व्यय विवरण		128
33.	श्रीरामचरितमानस के सिद्ध मंत्र		131
34.	श्रीरामशलाका प्रश्नावली		137
35.	विक्रमी संवत् 2075 के व्रत, पर्व, त्योहारों की सूची		141
36.	आरती एवं वन्दना		153
37.	श्रीरामचरितमानस पाठ एवं यज्ञ आयोजन हेतु आवश्यक सामग्री		160

विशेष : स्मारिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं।

श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति (पंजीकृत)

सदस्यों की सूची

क्र.सं.	नाम सदस्य	पता	दूरभाष	पद
1.	**पं0 दिनेश चन्द्र शर्मा**	**ए–447, सै0–47, नोएडा–201303**	**9811056467**	**अध्यक्ष**
2.	**डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद चतुर्वेदी**	**1इ, वार्ड नं0 26, लक्ष्मीबाई रोड, देहरादून**	**09411714660**	**उपाध्यक्ष**
3.	**श्री देवेन्द्र सिंह अवाना**	**B 5/6, सामने C-4/106, सै0–31, नोएडा**	**9811602397**	**"**
4.	**डॉ0 भगवान दास पटैरया**	**डी–11, सै0–36, नोएडा**	**9899004263**	**महासचिव**
5.	**डॉ0 रविन्द्र कुमार शर्मा**	**593, ग्राम बिजवासन, नई दिल्ली–110061**	**9911307799**	**सचिव**
6.	**श्री जे0के0 गुप्ता**	**ए–87, सै0–49, नोएडा**	**9810997834**	**कोषाध्यक्ष**
7.	**श्री लीलूराम वर्मा**	**सी–49, सै0–23, नोएडा**	**9312280743**	**कार्यकारी सदस्य**
8.	**श्री भिक्की लाल शर्मा**	**ए–105, सै0–20, नोएडा**	**9810836348**	**"**
9.	**श्री सूरजभान शर्मा**	**ए–141, सै0–20, नोएडा**	**8527132634**	**"**
10.	**श्री हुकमचन्द्र शर्मा**	**गली नं0–3C/7, बड चौक, ग्राम निठारी, सै0–31, नोएडा**	**9213999744**	**"**
11.	**श्री विनोद शर्मा**	**ए–19, सै0–22, नोएडा**	**9891117721**	**"**
12.	**श्री सुभाषचन्द्र मित्तल**	**865, जोशी रोड, करोल बाग, दिल्ली**	**9210364442**	**"**
13.	**श्रीमती नीलम श्रीवास्तव**	**एम–126, सै0–25, नोएडा**	**8800439949**	**"**
14.	**श्री शम्भू दत्त शर्मा**	**जी–2/3, शताब्दी एन्कलेव सै0–49, नोएडा**	**9868101502**	**"**
15.	**श्री अश्विनी कुमार भारद्वाज**	**बी–365, सै0–92, नोएडा–201305**	**9999533891**	**"**
16.	**श्री सी0एस0 भोगल**	**सी–2/103, सै0–36, नोएडा**	**9811026745**	**"**
17.	डॉ0 मनोज कुमार पटैरया	25/3, सै0–1, पुष्प विहार, नई दिल्ली	9868114548	आजीवन सदस्य
18.	श्री लक्ष्मी नारायण	60, मातेश्वरी वार्ड नं0 11, नौ गाँव, (छतरपुर) म0प्र0	9893772149	"
19.	श्री कृष्ण कुमार मिश्रा	12/250, कोटेश्वर नगर, पो0 रविशंकर यूनिवर्सिटी, (R.S.U.) जिला–रायपुर–492010	9406379229	"
20.	श्री देवेन्द्र कुमार रावत,	266, वार्ड नं0 7, स्नेहल नगर, वर्धा (महाराष्ट्र)	9423645351	"
21.	श्री भगवानदास पाठक	शीतल डायमंड, ए.के. रोड, हीरानगर, सूरत	9909253797	"
22.	श्री रविशंकर चतुर्वेदी	904, D-13, AWHO Sandeep Vihar, Seegehalli	9945169080	"
23.	श्री विशम्बर दयाल शर्मा	ग्राम निठारी, सै0–31, नोएडा	9289265996	"
24.	श्री राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता	एफ–8, सै0–20, नोएडा	9810464009	"
25.	श्री राधेश्याम शर्मा	ए–55, सै0–27, नोएडा	9999930102	"

क्र.सं.	नाम सदस्य	पता	दूरभाष	पद
26.	श्री मांगेराम भारद्वाज	ग्राम निठारी, सै0—31, नोएडा	9999232019	आजीवन सदस्य
27.	श्री रामेश्वर दत्त शर्मा	ग्राम निठारी, सै0—31, नोएडा	9953508132	"
28.	श्री रणजीत सिंह विष्ट	एफ—110, सै—20, नोएडा	9650324529	"
29.	श्री भीम सिंह	मोती मैमोरियल, दुर्गा पार्क, पो0—वसुन्धरा ग्राम—दल्लूपुरा, दिल्ली—110096	9810181724	"
30.	श्रीमती कुसुम पटैरया	डी—11, सै0—36, नोएडा	9811201847	"
31.	श्री ए.के. सक्सेना	एच—329, बीटा—II, ग्रेटर नोएडा	9540274589	"
32.	श्री देवीचरन शर्मा	बी—109, सै0—22, नोएडा	9350859122	"
33.	वैद्य अच्युत कुमार त्रिपाठी	एच 129, सै0—41, नोएडा	9868943638	"
34.	श्री वेद प्रकाश बंसल	ए 33, सै0—19, नोएडा	9350732724	"
35.	श्री रघुनाथ प्रसाद शर्मा	बी—10A—7 B, सै0—34, नोएडा	9899797090	"
36.	श्री सतीश चन्द्र शर्मा	बी 170 B, सै0—26,नोएडा	8800969798	
37.	श्री सुरेन्द्र कुमार ठक्कर	बी—69, सै0—52, नोएडा	9891445905	"
38.	श्री लाल मोहन चौधरी	ए—390, सै0—47, नोएडा	9899057335	"
39.	श्री अमर सिंह सेंगर	ए—162, सै0—20, नोएडा	0120—2440128	"
40.	श्री भू निधि शर्मा	डी—185, सै0—49, नोएडा	9871199809	"
41.	श्री श्रीपाल अवाना	ए—286, सै0—47, नोएडा	9210638386	"
42	श्री जगदीश प्रसाद शर्मा	216, जी0जी0 हॉस्टल वाली गली होशियारपुर, सै0—51, नोएडा	9311384212	"
43	श्री यशपाल सिंह	बी—19, सै0—49, नोएडा	9810339398	"
44.	श्री सुरेन्द्र पाल शर्मा	226—ई, पॉकेट—1, मयूर विहार—1, नई दिल्ली—110091	9971430274	"
45.	श्रीमती मधुमालती	बी—69, सै0—52, नोएडा	9891707373	"
46.	श्री विद्याराम अवाना	एच—7, सै0—27, नोएडा	9891960087	"
47.	श्रीमती भारती चतुर्वेदी	बी—2 / 721, कैलाश धाम, सै0—50, नोएडा	9650990257	"
48.	श्री शिवकुमार शर्मा	ए—100, सै0—33, नोएडा	9871636341	"
49.	आचार्य योगेन्द्र पाण्डे	श्रीराम मन्दिर, सै0—36, नोएडा	9810479542	"
50.	श्रीमती अर्चना शर्मा	बी—2 / 113, ब्लॉक नं0 8, कैलाशधाम अपार्टमैंट, सै0—50, प्लाट नं ई01, नोएडा	9968422229	"
51.	श्री महावीर प्रसाद त्यागी	डी—61, सै0—49, नोएडा	9810403264	"
52.	श्री परमात्मा शरण बंसल	ए—83, सै0—49, नोएडा	9810169329	"
53.	श्रीमती सीमा चौबे	एफ—13, सै0—20, नोएडा	9811323076	"
54.	श्री विपन कुमार	सी—3 / 149, सै0—36, नोएडा	9868139393	"
55.	श्री नरेश चौहान	एफ—18, सै0—39, नोएडा	9555955599	"
56.	श्री वी0जे0 चौधरी	बाली भगत रोड, बक्सी बाजार, कटक (उड़ीसा) 753001	9090438678	"
57.	श्री नरेन्द्र कुमार चाचान	65—ए, लखीमी पाथ, गुवाहाटी—781028	9435553023	"
58.	श्री मामचंद	ए—406, सै0—47, नोएडा	8368890732	"
59.	श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता	बी—16, सै0—49, नोएडा	8527785636	"

पाठकों के विचार

भक्ति ज्ञान का समन्वय

श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति की स्मारिका का 24वां अंक प्राप्त हुआ। विगत कई वर्षों से मैं स्मारिका के अंक पढ़ रहा हूँ। इसके लेख इस बात का प्रमाण है कि विद्वान लेखकों ने श्रीरामचरितमानस का गहन अध्ययन करके चौपाइयों का जो चयन किया है तथा उनका तदविषयक चिंतन एवं मनन उनकी लेखनी से भावपूर्ण शब्दों में मिश्रित हुआ है। इन सारगर्भित लेखों में भक्ति एवं ज्ञान का सुन्दर समन्वय है, जिसे संपादक मण्डल के सूक्ष्म अध्ययन के पश्चात् स्मारिका के माध्यम से पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है। एतदर्थ संपादकीय मण्डल को हार्दिक बधाई एवं साधुवाद।

श्रीरामचरितमानस महामना गोस्वामी तुलसीदास जी की एक आलौकिक एवं प्रेरणादायी कृति है। यह न केवल धार्मिक दृष्टि से पूजनीय है अपितु साहित्य, रचना एवं जीवन प्रबंधन की दृष्टि से भी सर्वोत्कृष्ट कृति है। इसमें जीवन के सभी आयाम परिलक्षित होते हैं। इसमें हमें मानवता की प्रतिष्ठता, दुष्टों का दमन, अनीति का प्रतिकार, नारी शोषण का विरोध, मातृत्व प्रेम, प्रकृति चित्रण, युद्ध कौशलता की रणनीति, जीने की कला, अध्यात्म के गूढ़ रहस्य, धर्म के विभिन्न आयाम, राजनीति तथा धर्मनीति के स्पष्ट दर्शन होते हैं। हम अपने माता–पिता, भाई–बंधु, पति–पत्नी जैसे संवेदनशील सम्बन्धों का कैसे निर्वहन करें, इसकी शिक्षा हमें श्रीरामचरितमानस से मिलती है। वर्तमान समय में जब धर्म और सदाचार कौने में खड़ा रो रहा है और अधर्म का बोल–बाला है, असुरिक्षा, आसुरी शक्ति भ्रष्टाचार और आतंकवाद से जन–जीवन त्रस्त है, ऐसे में श्रीरामचरितमानस की प्रासंगिकता एवं उपादेयता और भी बढ़ जाती है। आवश्यकता इस बात है कि हम इसकी उपादेयता को समझें तथा मानस के संदेशों को आत्मसात कर अपने जीवन का प्रबंधन करें।

श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति अपनी स्मारिका एवं समय–समय पर आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से मानस के इन संदेशों एवं उनकी उपादेयता को जन–मानस तक पहुंचाने का जो पुनीत कार्य कर रही है, वह स्तुत्य एवं वंदनीय है।

हर प्रसाद चतुर्वेदी, पूर्व उप निदेशक (शिक्षा) उत्तर प्रदेश सरकार

377 डब्ल्यू 2, बसंत विहार, नौबस्ता, कानपुर (उ0प्र0), फोन : 0512–2636399

कथावाचकों के लिए प्रेरणास्रोत

श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति की स्मारिका के वार्षिक अंक 24 में प्रकाशित सभी लेख कथा वाचकों के लिए प्रेरणास्रोत सिद्ध होंगे। मेरा विचार है कि इन लेखों में वर्णित प्रसंगों एवं उनकी चौपाइयों को कोई कण्ठस्थ कर ले तो श्रीरामचरितमानस पर अच्छा प्रवचन दे सकता है। सारगर्भित एवं शोधपूर्ण लेख प्रकाशित करने के लिए स्मारिका के सम्पादक मंडल को हार्दिक बधाई।

श्याम सुन्दर त्रिपाठी, बलखण्डी नाका, छाबी तालाब (बाँदा) उ0प्र0, फोन : 9453600834

आजीवन सदस्य बनना चाहता

मुझे वर्ष 2017–18 की स्मारिका प्राप्त हुई। पिछले अंक भी मिले। सभी में प्रेरणादायक लेख हैं। इस हेतु मैं सहयोग राशि चैक से भेज रहा हूँ। क्या कोई ऐसी व्यवस्था है कि एक मुश्त राशि भेजकर स्मारिका प्राप्त करने हेतु मैं आपकी समिति का आजीवन सदस्य बन सकूँ।

वी0जे0 चौधरी, बाली भगत रोड, बक्सी बाजार, कटक (उड़ीसा) 753001

आजीवन सदस्यता से संबंधित

स्मारिका प्राप्त करने हेतु आजीवन सदस्यता के संबंध में इस समिति द्वारा अभी कोई निर्णय नहीं लिया गया है, तथापि इच्छुक पाठक अपनी श्रद्धानुसार जो भी सहयोग राशि भेज दें, हम स्मारिका भेजते रहेंगे।

शासी निकाय, श्रीरामचरिममानस राष्ट्रीय समिति

स्मारिका अमूल्य विचारधारा से परिपूर्ण

नियमित रूप से प्रकाशित होने वाली श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति की स्मारिका का 24वाँ अंक प्राप्त हुआ। सभी लेख, श्रीराम जन्ममोहत्सव की झलकियाँ, श्रीरामकथा प्रवचनों के सारांश आदि लेखों सहित सम्पूर्ण ग्रन्थ अमूल्य विचारधाराओं से परिपूर्ण एवं अमृतवाणी तुल्य है। इस हेतु संपादक मंडल के सभी सदस्य, कथा व्यास एवं सभी गणमान्य लेखक महानुभावों को मैं नमन करता हूँ। आशान्वित हूँ कि भविष्य में भी यह ज्ञान–विज्ञान एवं भक्ति गंगा अविरल प्रवाहित होती रहेगी।

मोहन लाल मिश्र, म0नं0 18/240 हमीरपुर (उ0प्र0) फोन : 09621369468

बहुत अच्छा प्रयास

मुझे श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति की स्मारिका का 24वाँ अंक प्राप्त हुआ। मुझे सभी लेख बहुत अच्छे लगे। समाज के नैतिक उत्थान एवं ईश्वर के प्रति आस्था जागृत करने का यह बहुत अच्छा प्रयास है। इस हेतु स्मारिका के संपादक मंडल को साधुवाद।

आर0पी0 निगम, प्राचार्य (सेवानिवृत्त) उच्चतर मा0वि0 नौगाँव, (बुंदेलखण्ड) फोन : 09425473580

समाज के लिए उपयोगी पत्रिका

मैंने आपकी स्मारिका अपने किसी मित्र के यहाँ देखी। श्रीरामजी का आकर्षक चित्र देखकर उत्सुकता हुई कि इसे पढ़ूँ। पढ़ने पर मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि जिस प्रकार इसका आवरण आकर्षक है उसी प्रकार से इसमें प्रकाशित लेख भी भक्ति–ज्ञान–वैराग्य से परिपूर्ण हैं। अतः यह पत्रिका समाज के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होगी, ऐसा मेरा विश्वास है। मैं इसका आजीवन सदस्य बनना चाहता हूँ।

नरेन्द्र रावत, गणपति वार्ड, ए.आर.वी.आई. जिला वार्धा (महाराष्ट्र) पिन–442201 फोन : 09423645249

स्मारिका भक्ति-ज्ञान का अथाह सागर

मुझे श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति की स्मारिका को पढ़ने का अवसर मिला। इसमें प्रकाशित शोधपूर्ण लेखों को पढ़कर मैं इसके संपादक मंडल से जुड़ गई। इससे मुझे 'श्रीरामचरितमानस' जैसे भक्ति–ज्ञान–वैराग्य के अथाह समुद्र में गोता लगाने और श्रीराम–नाम स्मरण का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस हेतु मैं समिति के पदाधिकारियों का हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ।

श्रीमती मंजु बंसल, 279, सैक्टर–28, नोएडा

स्मारिका प्रेरणा स्रोत

स्मारिका अंक 24 वर्ष 2017–2018 प्राप्त कर चित गद्‌गद् हो गया। जिन भक्तों ने अपने विचारों (गूढ़ व मर्यादित आदर्शों) को अत्यंत सरलता से निरूपित किया है, उन्हें कोटि–कोटि नमन करते हैं। यह सब उनके अच्छे कर्मों का प्रतीक है। जन सेवा से बढ़कर कोई कर्म नहीं, पारस्परिक सदभाव एवं विश्वास ही समिति की सफलता का मूल आधार है। यह हमारे जीवन के सभी आयामों के लिये प्रेरणास्रोत है।

राजेन्द्र पाल एवं श्रीमती चंद्रमुखी, म0नं0 1471, सेक्टर 29 बी, चंडीगढ़ 160030 फोन : 09876143712

सहयोग राशि भेजने वालों को साधुवाद

स्मारिका प्रकाशनार्थ हमें विज्ञापन दाताओं एवं श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति के सदस्यों के अतिरिक्त दिल्ली, रोहतक (हरियाणा), भीलवाड़ा, कोटा, सीकर, जैसलमेर, जूही और जयपुर (राजस्थान), चंडीगढ़, कैमूल (बिहार), चंद्रपुर (महाराष्ट्र), भोपाल, नरसिंहपुर, मुरैना, (मध्य प्रदेश), सुरेन्द्र नगर (गुजरात), कटक (उड़ीसा), गाजीपुर, मेरठ कानपुर एवं मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश), एरोड (तमिलनाडु), भाटापारा (छत्तीसगढ़) के पाठकों से सहयोग राशि प्राप्त हुई है। हम विज्ञापन दाताओं एवं उपर्युक्त पाठकों को साधुवाद ज्ञापित करते हुए आशान्वित है कि भविष्य में भी स्मारिका के प्रचार–प्रसार हेतु इसी तरह सहयोग करके हमारा उत्साहवर्धन करते रहेंगे।

लेखकों के लिए, मुद्रक (प्रिंटर) के सुझाव

1. कृपया अपने लेख, MS Word या Corel Draw 13 साफ्टवेयर में टाईप करें।
2. टाइप के लिए Dev-10 या Kruti-10 फॉन्ट का प्रयोग करें। यह सभी टाइप सेन्टर्स पर उपलब्ध होता है।
3. लेख हमें vinit.tyagi.gzb@gmail.com पर भेजें एवं bpateria@ gmail.com पर cc करें।
4. ई–मेल के Subject में कृपया स्मारिका व लेख का नाम अवश्य डालें। उदाहरणार्थ 'मर्यादा पुरुषोत्तम राम' लेख का Subject इस तरह होगा – Navmi Smarika : Maryada Purusottam Ram

सद् विचार

मिट्टी का मटका और परिवार की कीमत केवल बनाने वाले को पता चलती है, तोड़ने वाले को कदापि नहीं। जीवन में समस्याओं से संघर्ष कैसे किया जाता है यह पिता से सीखये और संस्कार माँ से। बाकी सब कुछ दुनियाँ सिखा ही देगी।

मोह से बचने का उपाय

मोह से बचने का सबसे उत्तम साधन है राम जी की भक्ति। जब मनुष्य राम जी की शरण में आता है तो उसका मन पवित्र होने लगता है, मन के पवित्र होने से उसके कर्म पवित्र हो जाते हैं। कर्म के पवित्र होने से उसकी राम जी में भक्ति और दृढ़ हो जाती है। इस प्रकार सतत प्रयास से एक दिन वह पूर्ण रूप से संसार के भ्रम से मुक्त हो जाता है और जिस दिन उसका भ्रम पूर्ण रूप से दूर हो जाता है, वह ईश्वर की अविरल भक्ति प्राप्त करके राम जी को प्राप्त कर लेता हैं।

श्रीराम जन्ममहोत्सव की झलकियाँ

कथा व्यास : **आचार्य पं. सुरेन्द्र शास्त्री 'मानस कुसुम'**,
फोन : 09893808984

आज हमारा देश ही नहीं बल्कि पूरा विश्व द्रुत गति से भौतिकवाद की ओर अग्रसर होकर इसकी चरम सीमा तक पहुँचने का प्रयास कर रहा है। इस प्रयास में हम आध्यात्मवाद को भूलते जा रहे हैं, जिसके दुष्परिणाम स्वरूप हम सुख–सुविधाएँ तो जुटा लेते हैं किन्तु जीवन में सुख–शान्ति का अभाव होता जाता है। हमारे जीवन में अमन–चैन की वर्षा होती रहे, इसके लिए हमें परम पिता परमात्मा द्वारा, (मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम के रूप में) स्थापित आदर्शों का पालन करना होगा। इसी उद्देश्य से यह समिति विगत 27 वर्षों से प्रतिवर्ष श्रीराम जन्म महोत्सव आयोजित करती आ रही है, जिसमें श्रीराम जी की बाल लीलाओं के साथ–साथ उनके द्वारा आचरित आदर्शों पर प्रकाश डाला जाता है जिससे समाज का नैतिक उत्थान हो सके। इसी शृंखला में 27 वाँ 'श्रीराम जन्ममहोत्सव' चैत्र शुक्ल नवमी संवत् 2074 तदनुसार 4 अप्रैल 2017 को 'महाराजा अग्रसेन भवन, सैक्टर 33, नोएडा में आयोजित हुआ।

इस पावन बेला में समिति के अध्यक्ष पं0 दिनेश चन्द्र शर्मा ने समिति के सदस्यों के साथ श्रीगणेश पूजन करके कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। इस अवसर पर वाराणसी से पधारे आचार्य पं0 सुरेन्द्र शास्त्री 'मानस कुसुम' ने श्रीराम कथामृत पान कराकर श्रोताओं को मंत्र मुग्ध कर दिया। उनके प्रवचन के कुछ अंश पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किए जा रहे हैं। संत शिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास ने श्रीरामचरितमानस में श्रीराम जी का प्रकट होना, अवतार लेना और जन्म लेना; इन तीन तथ्यों का वर्णन किया है। वे कौशिल्या जी के लिए प्रकट शब्द का, दशरथ जी के लिए 'जन्म शब्द' का और साधु–सन्तों–भक्तों के लिए अवतार शब्द का प्रयोग करते हैं। कौशिल्या जी श्रीराम जी को ईश्वर के रूप में देखतीं थीं क्योंकि उन्होंने पूर्व जन्म में जब शतरूपा के रूप में तप किया था तब यह वरदान माँगा था –

जे निज भगत नाथ तब अहहीं। जो सुख पावहिं जो गति लहहीं।।

सोइ सुख सोइ गति सोइ भगति सोइ निज चरन सनेहु।
सोइ बिबेक सोइ रहनि प्रभु हमहि कृपा करि देहु।।

(1 / 150)

इस भक्तिभावना के कारण श्रीराम जी कौशिल्या जी के समक्ष प्रकट हुए, किन्तु राजा दशरथ जी उनको पुत्र रूप में देखना चाहते थे। उन्होंने पूर्व जन्म में जब मनु के रूप में तप किया था तब यही वरदान माँगा था कि भले ही लोग उनको मूढ़ कहते रहे, मैं आपको अपने पुत्र के रूप में देखना चाहता हूँ –

दान सिरोमनि कृपानिधि नाथ कहउँ सतिभाउ।
चाहउँ तुम्हहि समान सुत प्रभु सन कवन दुराउँ।

(1 / 149)

सुत बिषयक तव पद रति होऊ। मोहि बड़ मूढ़ कहै किन कोऊ।।

(1 / 151 / 5)

संतों–भक्तों के लिए यह भगवान का अवतार है क्योंकि वे मानते है। कि कण–कण में व्याप्त अखिल ब्रह्माण्ड नायक परब्रह्म परमात्मा उनके लिए धराधाम पर अवतरित होते हैं।

अखिल ब्रह्माण्ड नायक ब्रह्म के धराधाम में मानव रूप में प्रकट होने, जन्म लेने अथवा अवतार लेने के अनेक कारण बताए गए हैं। प्रत्येक कलप में भिन्न–भिन्न कारणों से ईश्वर अवतार लेते हैं और इन भिन्नताओं का वर्णन ऋषि–मुनियों ने जिन ग्रन्थों में किया है उनमें भिन्नता देखकर संशय नहीं करना चाहिए। गोस्वामी तुलसीदास जी श्रीरामचरितमानस के प्रारंभ में ही इस तथ्य को इंगित कर देते हैं यथा –

कलप भेद हरिचरित सुहाए। भाँति अनेक मुनीसन्ह गाए।
करिअ न संसय अस उर आनी। सुनिअ कथा सादर रति मानी।।

(1 / 33 / 7–8)

एक कलप में अन्य कारणों के साथ–साथ मनु–सतरूपा को दिए वरदान को पूर्ण करने के लिए भगवान ने अवतार लिया। मनु–सतरूपा ने कठोर तप करके कण–कण में व्याप्त ब्रह्म को प्रसन्न कर लिया। इससे पूर्व ब्रह्मा–विष्णु–महेश कई बार आए और वरदान माँगने को कहा पर वे अडिग रहे। उनको तो सर्वेश्वर अखिल ब्रह्माण्ड नायक के दर्शन करने की लालसा थी –

उर अभिलाष निरंतर होई। देखिअ नयन परम प्रभु सोई।।

(1 / 144 / 3)

मनु–सतरूपा के दृढ़ निश्चय को देखकर उनके प्रेम से सर्वेश्वर प्रभु प्रसन्न हो गए और वर माँगने के लिए आकाशवाणी हुई। मनु जी ने कहा कि प्रभु हमें दर्शन दीजिए। सर्वेश्वर प्रभु कहते हैं कि मेरे तो अनेक रूप हैं, तुम किस रूप में दर्शन करना चाहते हो; तब मनु जी विनती करते हैं कि जिस स्वरूप के दर्शन हेतु मुनि सदैव यत्नशील रहते हैं और जो काकभुसुंडि जी के मन रूपी सरोवर में हँस की तरह विचरण करता हो, हम उस स्वरूप के दर्शन करना चाहते हैं –

जो सरूप बस सिव मन माहीं। जिहिं कारन मुनि जतन कराहीं।।
जो भुसुंडि मन मानस हंसा। सगुन अगुन जेहि निगम प्रसंसा।।
देखहिं हम सो रूप भरि लोचन। कृपा करहु प्रनतारति मोचन।।

(1 / 146 / 4–6)

दम्पत्ति के ऐसे वचन सुनकर श्रीराम जी सीता जी के साथ उनके सम्मुख इस रूप में प्रकट हो गए –

नील सरोरुह नील मनि नील नीरधर स्याम।
लाजहिं तन सोभा नरखि कोटि कोटि सत काम।।

(1 / 146)

भगवान का स्वरूप नील कमल के समान, नीलमणि के समान और नीलगगन के समान नीले रंग का है। इसमें दम्पत्ति की तीनों इच्छाएँ पूर्ण हो गई। जब शिवजी ने बाल 'श्रीराम' के दर्शन किए तब उनका बदन नील कमल के समान था और मुनियों के लिए अवतार है प्रभु का, तो मानों उनका शरीर नील गगन के समान है और जब श्रीराम जी कुछ बड़े होकर आँगन में चलने लगे तब काकभुसुंडि जी ने उनके दर्शन नीलमणि जडित आँगन में किए तो मानों जो बाल स्वरूप काकभुसुंडि जी के मन में बसा है, भगवान ने उसके भी दर्शन करा दिए। दशरथ जी के आँगन का वर्णन, जहाँ चारों भाई खेलते थे, इस प्रकार किया गया है –

नृप मंदिर सुंदर सब भाँती। खचित कनक मनि नाना जाती।।
बरनि न जाइ रुचिर अँगनाई। जहँ खेलहिं नित चारिउ भाई।।

(7 / 76 / 2–3)

मनु–सतरूपा से भगवान ने वरदान माँगने को कहा। मनु जी विचार करने लगे कि भगवान की जो छवि अपने नेत्रों से निहार रहा हूँ उसको मैं स्थाई रूप से पा सकूँ इसके लिए एक ही उपाय है कि इन्हें अपने पुत्र के रूप में माँग लूँ। इस विचार से उन्होंने यह वरदान माँगा – ।

दानि सिरोमनि कृपानिधि नाथ कहउँ सतिभाउ।
चाहउँ तुम्हहि समान सुत प्रभु सन कवन दुराउ।।

(1 / 149)

इस प्रकार मनु–सतरूपा के वरदान को सत्य करने के लिए अखिल ब्रह्माण्ड नायक, कण–कण में व्याप्त निर्गुण ब्रह्म, जब वे दशरथ–कौशिल्या के रूप में अवध में आए, कौशिल्या जी के कक्ष में प्रकट हुए। गोस्वामी तुलसीदास जी लिखते हैं –

भए प्रगट कृपाला दीन दयाला कौसल्या हितकारी।
हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप बिचारी।।

(1 / 192 / छन्द)

माँ कौशिल्या के कहने पर भगवान शिशु रूप में हो गए और रुदन करने लगे। तत्पश्चात कैकेई जी ने एक और सुमित्रा जी ने दो पुत्रों को जन्म दिया। महाराज दशरथ यह समाचार सुनकर परमानंद में डूब गए और फिर बाजे बजाने को कहा। अयोध्या में सर्वत्र आनन्दमय वातावरण हो गया। गुरु वसिष्ठ जी आए और

नंदीमुख श्राद्ध कराया। कुछ दिन इस प्रकार आनंद में बीते। पुनः नामकरण के लिए गुरु जी को बुलाया गया। उन्होंने चारों पुत्रों का नामकरण इस प्रकार से किया –

जो आनंद सिंधु सुखरासी। सीकर तें त्रैलोक सुपासी।।
सो सुखधाम राम अस नामा। अखिल लोकदायक विश्रामा।।
बिस्व भरन पोषन कर जोई। ताकर नाम भरत अस होई।।
जाके सुमिरन तें रिपु नासा। नाम सत्रुहन बेद प्रकासा।।
लच्छन धाम राम प्रिय सकल जगत आधार।
गुरु बसिष्ट तेहि राखा लछिमन नाम उदार।।

(1 / 197)

इस पावन बेला में मधुर बधाई गीत गाए गए जिस पर श्रोताओं ने मंत्रमुग्ध होकर नृत्य किया। कथा व्यास ने कुछ मधुर बाल लीलाएँ तथा भगवान शंकर द्वारा उनके दर्शन करने का विशद वर्णन किया।

इस महोत्सव में 'सर्व हितकारी शिक्षा निकेतन' निठारी, सैक्टर–31 की छात्राओं ने 'मेरे यार सुदामा रे' गीत हरियाणवी भाषा में मधुर स्वर में प्रस्तुत किया। उन्हें समिति द्वारा पुरस्कृत किया गया। अग्रवाल मित्र मंडल के पूर्व अध्यक्ष श्री परमात्माशरण बंसल जी ने पुरस्कार प्रदान किए। दादरी क्षेत्र के विधायक माननीय श्री तेजपाल नागर ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि ऐसे कार्यक्रमों को प्रोत्साहित करना चाहिए क्योंकि ये हमारी प्राचीन भारतीय संस्कृति का संवर्धन करते हैं। इस पावन बेला में समिति की वार्षिक स्मारिका के 24वें अंक का विमोचन हुआ।

इस अवसर पर बोलते हुए पूर्व आई0ए0एस0 अधिकारी श्री गणेश शंकर त्रिपाठी ने कहा कि हम रामराज्य की कल्पना तो करते हैं पर श्रीराम जी के आदर्शों को भूल जाते हैं। जब हम उनके आदर्शों को अपनाएँगे तभी रामराज्य की कल्पना सार्थक हो सकेगी। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम जी की जन्मभूमि अयोध्या है और जन्मभूमि के स्थान के संबंध में उच्च न्यायालय का निर्णय भी आ गया है। अतः अब अविलंब वहाँ पर भव्य श्रीराम मंदिर का निर्माण होना चाहिए और फिर हम सभी वहाँ पर श्रीरामजन्म महोत्सव मनाएँ। इस कार्यक्रम में माननीय केन्द्रीय मंत्री डॉ0 महेश शर्मा आने वाले थे, किन्तु कुछ अपरिहार्यकारण वश वे नहीं आ सके, उनके प्रतिनिधि श्री संजय वाली पधारे। दादरी से पत्रकार श्री राजेश बैरागी भी शामिल हुए। मदर टैरेसा पब्लिक स्कूल के विद्यार्थी एवं अध्यापक भी उपस्थित थे। समिति के पूर्व कोषाध्यक्ष श्री ओमवीर सिंह हापुड़ से इस कार्यक्रम में भाग लेने आए। महासचिव डॉ0 भगवानदास पटैरया द्वारा प्रस्तुत धन्यवाद ज्ञापन के पश्चात आरती हुई तथा भोजन–प्रसाद के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

माना दुनियाँ बुरी है, सब जगह धोखा है।
पर हम तो अच्छे बनें, किसने रोका है ।।

तुलसी जयंती समारोह

कथा व्यास : **श्री पंकज रामायणी (मानस चातक)**

मो. : 09308609468

श्रावण शुक्ल सप्तमी संवत् 2074 तदनुसार रविवार दिनाँक 30 जुलाई 2017 को श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति एवं गीता रामायण समिति के संयुक्त तत्वावधान में सैक्टर–36, नोएडा के श्रीराम मंदिर में गोस्वामी तुलसीदास जी की 520वीं जयंती के उपलक्ष्य में एक भव्य समारोह का आयोजन हुआ जिसमें नोएडा के सर्व हितकारी शिक्षा निकेतन पब्लिक स्कूल, निठारी, सैक्टर–31, राजकीय इंटर कॉलेज, सैक्टर–22, तथा मदर टैरेसा पब्लिक स्कूल गिझौड़, सैक्टर–53 के विद्यार्थियों ने इस अवसर पर गोस्वामी तुलसीदास जी तथा उनकी दिव्य कृति श्रीरामचरितमानस पर अपने विचार व्यक्त किए। इस पावन बेला में पटना से पधारे कथा व्यास श्री पंकज रामायणी (मानस चाक) ने श्रीरामचरितमानस के कुछ प्रसंगों की भावपूर्ण व्याख्या की। इसका संक्षिप्त विवरण निम्नांकित है –

गोस्वामी तुलसीदास जी का जन्म चित्रकूट धाम के बाँदा जिले के राजापुर ग्राम में विक्रम संवत् 1554 में दम्पत्ति आत्माराम दूबे तथा हुलसी के यहाँ हुआ था। जन्म होते ही उन्होंने **'राम'** शब्द का उच्चारण किया। इसलिए उनका नाम 'रामबोला' रख दिया गया। जन्म के समय उनके मुख में पूरे बत्तीसों दाँत थे तथा डील–डौल पाँच वर्ष के बालक के समान था। अतः अनिष्ट की आशंका से माता हुलसी ने इन्हें अपनी दासी के साथ उसकी ससुराल भेज दिया और इसके दूसरे दिन वे इस संसार से चल बसीं। दासी चुनिया का भी पाँच वर्ष बाद देहान्त हो गया। अब 'राम बोला' अनाथ हो गया। कुछ समय तक माता अन्नपूर्णा (पार्वती जी) ने इनका भरण पोषण किया और फिर शिवजी की प्रेरणा से श्री नरहर्यानन्द जी इन्हें अयोध्या ले आए। और इनका नाम 'तुलसीदास' रखा। इन्हें 'राम मंत्र' की दीक्षा दी, वेद शास्त्र पढ़ाए और 'श्रीरामचरित' सुनाया। उनकी लोकवासना जागृत देखकर विद्यागुरु ने इन्हें अपने ग्राम राजापुर भेज दिया। संवत् 1583 में इनका रत्नावली से विवाह हो गया और जब वे मायके गईं तो कई बाधाओं को पार करते हुए तुलसीदास जी उनके घर रात्रि में ही पहुँच गए। इस पर रत्नावली ने उन्हें धिक्कारा और कहा कि '' मेरे इस हाड़–मांस के शरीर में जितनी तुम्हारी आसक्ति है उससे आधी भी यदि भगवान में होती तो तुम्हारा बेड़ा पार हो गया होता।'' तुलसीदास जी को ये शब्द लग गए और वे तुरंत वहाँ से चल दिए तथा प्रयाग में साधु वेष ग्रहण किया। काशी में एक प्रेत की सहायता से उन्हें श्रीहनुमान जी के दर्शन हुए और उनकी कृपा से चित्रकूट में श्रीराम–लक्ष्मण के दर्शन कर कृतार्थ हो गए। शिवजी की प्रेरणा से अयोध्या जाकर संवत् 1631 में श्रीरामचरितमानस की रचना उस दिन प्रारंभ की जिस दिन श्रीरामजी का जन्म महोत्सव था और दो वर्ष, सात माह तथा छब्बीस दिन में संवत् 1633 के मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष पंचमी श्रीसीताराम विवाह के दिन सातों काण्ड पूर्ण हुए। श्री हनुमान जी की प्रेरणा से इन्होंने विनय पत्रिका लिखी। गीतावली, दोहावली में भी

श्रीरामचरित वर्णन किया, 'हनुमान चालीसा' लिखा। उन्होंने कुल बारह ग्रन्थ लिखे। संवत् 1680 श्रावण कृष्ण तृतीया को काशी के असीघाट पर 'राम–राम' कहते हुए उन्होंने अपने शरीर का परित्याग किया।

श्री हनुमान जी ने तुलसीदास जी से पूछा कि श्रीरामचरितमानस में क्या तुमने कहीं अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है। कई भक्तों की गाथाएँ हैं उनमें एक परम भक्त है केवट, जिसकी तुलना मैं अपने से करता हूँ। सारा जगत श्रीरामजी से माँगता है पर केवट से राम जी स्वयं जाकर माँगते हैं –

मागी नाव न केवटु आना। कहइ तुम्हार मरमु मैं जाना।।

(2 / 100 / 3)

केवट कहता है कि मैंने आपका मरम (भेद) जान लिया है। जिनके मरम को ब्रह्मा–विष्णु–महेश भी नहीं जानते, साथ रहते हुए स्वयं लक्ष्मण जी भी नहीं जान सके, उनके मरम को केवट कहता है कि मैं जानता हूँ। महर्षि वाल्मीकि जी के अनुसार –

जगु पेखन तुम्ह देखनिहारे। बिधि हरि संभु नचावन हारे।।
तेउ न जानहिं मरमु तुम्हारा। औरु तुम्हहिं को जाननिहारा।।
सोइज ानइज ेहिद ेहुज नाईाज ानतत ुम्हहित ुम्हइह ोइज ाई।।

(2 / 127 / 1–3)

पंचवटी निवास के समय खरदूषण वध के उपरान्त श्रीरामजी सीता जी से कहते हैं कि तुम कुछ समय तब तक पावक में निवास करो जब तक मैं राक्षसो का संहार कर दूं। यह रहस्य लक्ष्मण जी को भी ज्ञात नहीं था।

तुम्ह पावक महुँ करहु निवासा। जौ लगि करौं निसाचर नासा।।
लछिमनहूँ यह मरमु न जाना। जो कछु चरित रचा भगवाना।।

(3 / 24 / 2 एवं 5)

केवट कहता है कि आपकी चरन रज से पत्थर की शिला स्त्री बन गई तो मेरी नाव तो लकड़ी की है। मैं इसी से अपने परिवार का भरण पोषण करता हूँ, यदि यह स्त्री बन गई तो मैं क्या करूँगा। आज वही भगवान जिन्होंने वामन अवतार में एक पग से पूरी पृथ्वी नाप ली थी, केवट से गंगा पार करने के लिए नाव माँग रहे हैं।

जासु नाम सुमिरत एक बारा। उतरहिं नर भवसिंधु अपारा।।
सोइ कृपालु केवटहिं निहोरा। जेहिं जगु किय तिहु पगहु ते थोरा।।

(2 / 101 / 3–4)

श्रीराम जी ने कहा कि हमें विलंब हो रहा है, शीघ्र ही जल लाकर पैर पखार कर हमें गंगा पार करा दो। तब केवट लकड़ी का कठवता लाकर श्रीराम जी के चरण पखारता है –

केवट राम रजायसु पावा। पानि कठवता भरि लेइ आवा।।
अति आनंद उमगि अनुरागा। चरन सरोज पखारन लागा।।

(2 / 101 / 6–7)

केवट ने भगवान के चरणोदक का परिवार सहित पान करके अपने पितरों को भवसागर से पार कराकर तब श्रीराम जी को गंगा पार कराया –

पद पखारि जलु पान करि आपु सहित परिवार।
पितर पारु करि प्रभुहि पुनि मुदित गयउ लेइ पार।।

(2 / 101)

गंगा पार करने के पश्चात श्रीराम जी ने विचार किया कि केवट को कुछ देना चाहिए। पति के मन की बात जानने वाली सीता जी ने अपने हाथ से अंगूठी उतार कर श्रीराम जी को दे दी और जब श्रीराम जी उतराई के रूप में केवट को वह अंगूठी देने लगे तो उसने चरण पकड़ लिए और कहा कि आज मेरे सारे दुख–दारिद्र समाप्त हो गए। मुझे और कुछ नहीं चाहिए। लौटते समय आप मुझे जो देंगे मैं शिरोधार्य लूँगा। तब श्रीराम जी ने उन्हें विमल भक्ति का वरदान देकर विदा किया।

बहुत कीन्ह प्रभु लखन सियँ नहिं कछु केवटु लेइ।
बिदा कीन्ह करुनायतन भगति बिमल बरु देइ।।

(2 / 102)

हम भगवान से नाशवान वस्तुओं की माँग करते रहते हैं, पर यदि कुछ न माँगे तो जो केवट को प्राप्त हुई वह विमल भक्ति मिल सकती है। इसी से हमारा कल्याण संभव है। भक्त केवट के प्रसंग से हमें यह शिक्षा लेनी चाहिए। श्रीराम कथा का यह नियम है कि यदि भगवान की बाल लीलाओं का वर्णन किया जाए तो श्री सीताराम विवाह तक की कथा श्रवण कराकर कथा को विश्राम देना चाहिए और यदि वन गमन का प्रसंग हो तो कथावाचक को रामराज्य तक की कथा सुनानी चाहिए।

गंगा जी पार करके श्रीराम जी प्रयागराज में मुनि भारद्वाज जी के आश्रम में जाते हैं। उनसे आगे का मार्ग पूछते हैं। चार बटुकों को साथ लेकर आगे यमुना पार करते हैं और वहीं से निषादराज को वापिस भेज देते हैं। प्रभु श्री वाल्मीकि जी के आश्रम जाते हैं। उनसे रहने का स्थान पूछते हैं और फिर चित्रकूट में निवास करने लगते है। निषादराज को अकेला आया देखकर मंत्री सुमंत्र अत्यंत व्याकुल हो जाते है और किसी तरह अयोध्या लौटते हैं। राम–विरह में दशरथ जी अपने प्राण छोड़ देते हैं। भरत जी को बुलाया जाता है। वे पिता का अंतिम संस्कार करके श्रीराम जी को मनाने चित्रकूट चल देते हैं। वहाँ पर राजा जनक भी आते हैं। श्रीराम जी वन से नहीं लौटते पर भरत जी को अपनी चरण पादुका देते हैं जिसे वे अयोध्या के सिंहासन पर विराजित करके उनकी आज्ञानुसार राजकाज संभालते हुए कठोर तप में लीन रहते हैं। श्रीराम

जी चित्रकूट से चलकर पंचवटी में निवास करते हैं। मार्ग में अत्रि मुनि, अगस्त मुनि से आशीर्वाद लेते हैं। सुतीलक्षण मुनि की मनोकामना पूर्ण करते हैं। शूर्पणखा को कुरूप करने से खर–दूषण आक्रमण करते हैं। प्रभु उनका वध कर देते हैं। इससे मारीच की सहायता से रावण सीता हरण करता है। गीध का उद्धार करके श्रीराम जी शबरी को सद्गति प्रदान करते हैं। तत्पश्चात श्रीराम जी पंपापुर सरोवर जाते हैं। नारद जी को भक्तों के लक्षण बताकर किष्किंधा पर्वत की ओर जाते हैं। वहाँ हनुमान जी से मिलन होता है और सुग्रीव से मित्रता होती है। बालि वध के पश्चात् सुग्रीव सीता जी की खोज के लिए चारों दिशाओं में वानर समूह भेजते हैं। दक्षिण दिशा की टोली में श्री हनुमान जी थे जो जामवंत की प्रेरणा तथा श्रीराम जी की कृपा से लंका जाकर सीता जी से मिलते हैं, विभीषण को राम काज की शिक्षा देकर लंका जलाते हैं और श्रीराम जी को आकर पूरा वृतांत सुनाते हैं। श्रीराम जी वानर सेना सहित समुद्र तट पर आते हैं और वहाँ पर 'रामेश्वर' की स्थापना करते हैं। इस बीच विभीषण को शरणागति प्रदान करते हैं। समुद्र पर पुल बनाकर लंका प्रवेश करते हैं। संधि प्रस्ताव लेकर अंगद जी रावण से मिलते हैं पर श्रीराम जी का अमित प्रभाव दिखाने पर भी रावण नहीं मानता है। रावण को मंदोदरी भी चार बार समझाती है, पर अंत में युद्ध होता है जिसमें कुंभकरण, मेघनाद एवं रावण सहित सभी राक्षसों का संहार होता है। सीता जी की अग्नि परीक्षा के पश्चात् श्रीराम जी सीता जी, भाई लक्ष्मण एवं प्रमुख वानर– भालुओं के साथ पुष्पक विमान से अयोध्या आए। श्री भरत जी, गुरु जी, माताओं एवं सभी पुरजनों से 'अमित रूप में' प्रकट होकर एक साथ मिले। शुभ मुहूर्त में श्रीराम जी का राज्याभिषेक हुआ।

सिंघासन पर त्रिभुवन साईं। देखि सुरन्ह दुंदुभी बजाईं।।

(7/12/8)

कार्यक्रम के समापन के समय पूर्व आई0ए0एस0 अधिकारी (सेवानिवृत्त) श्री गणेश शंकर त्रिपाठी जी द्वारा विद्यार्थियों को पुरस्कार प्रदान किए गए। कार्यक्रम को सफल बनाने में गीता रामायण समिति के अध्यक्ष श्री दिनेश पाण्डेय, कार्यकारी सदस्य श्री सी0एस0 भोगल एवं मंदिर के प्रधान पुजारी श्री योगेन्द्र पाण्डेय का भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ। श्रीराम जी की आरती एवं भोजन प्रसाद के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

शोक समाचार

हमें अत्यंत दुःख के साथ सूचित करना पड़ रहा है कि इस समिति के पूर्व उपाध्यक्ष **श्री लीले सिंह** (पूर्व प्रधान ग्राम निठारी, सैक्टर–31, नोएडा) गुरुवार मार्गशीर्ष शुक्ल पंचमी संवत् 2074 तदनुसार 23 नवम्बर 2017 को चिर निद्रा में लीन हो गए। वे इस समिति के सभी कार्यक्रमों में विशेष रूचि रखते थे एवं महत्वपूर्ण परामर्श भी प्रदान करते थे। इस समिति की ओर से हम उनकी आत्मा की शान्ति के लिए तथा उनके परिजनों एवं मित्रों को धैर्य प्रदान करने हेतु परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं।